वर्ग–7 **<u>विषय–हिंदी लिटरेचर</u>** दिनांक–04 / 05 / 2020

<u>पाठ–गाता खग</u>

<u>भावार्थ</u>– सुमित्रानंदन पंत प्रकृति प्रेमी कवि हैं। इस कविता में कवि प्रकृति से मनुष्यों को जीवन में क्या संदेश मिल रहे है उसकी बात करते हैं। कवि प्रकृति के सौंदर्य का ही नहीं बल्कि मानव जीवन के विभिन्न रूपों का दर्शन भी करते हैं। प्रकृति के विभिन्न रूप मानव जीवन की गतियों का संदेश देती है।

जब सुबह होती है तब चिड़ियाँ चहचहाने लगती है। पक्षी हमें नए दिन की शुरूआत करने तथा नए जीवन को सुखमय बनाने की कामना करते हैं। और जब शाम के समय मंगल आरती होती है तब पक्षी अपने गीतों द्वारा कल्याणकारी सुखमय जीवन की कामना करती है।

जब रात्री के समय तारे रूपी आखों से बिना पलक झपकाए धरती को शांत होकर देखने के कारण उनकी आँखे भर आती है और वही आँसू सुबह में ओस की बूँदों के रूप में धरती पर पेड़–पौधों तथा घास–फूस आदि पर दिखलाई पड़ती हैं।

हसता हुआ फूल हमें यह सिखलाता है कि जिस तरह फूल सिर्फ कुछ पल के लिए खिलता है और चारों ओर अपनी सुगंध से अपनी उपस्थिति का अहसास दिला देता है ठीक उसी तरह मनुष्य का जीवन भी क्षण भंगुर होता है इसलिए मनुष्य को अपने कामो द्वारा, अपने व्यवहार द्वारा अपने हृदय की खुशबू से संसार का आंगन महकाने के लिए कवि कहा रहे हैं।

कवि कहते हैं कि उठती हुई समुद्र की लहरे यह कहती हैं की भले ही मनुष्यों को अपने कर्मो में सफलता न मिला हो या किनारा न मिला हो। लेकीन हमें हार नहीं मानना चाहिए और उमंग के साथ निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए। जिस तरह लहरे निरंतर खुशी से आगे बढ़ती जाती है। लहरे हमें निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। समुद्र की लहरे कभी–कभी किनारा न मिलने के कारण काँप कर रह जाती हैं। फिर भी वह निराश नहीं होती है। वही किनारे तक पहुँचने के लिए पानी का बुलबुला भी निरंतर प्रयास करता रहता है। और उसे यह समझ आ जाता है कि एक बार में ही सफलता नहीं मिलती हैं।

<u>गृह कार्य</u>

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपनी कॉपी में लिखें–

1. प्रातः काल पक्षी क्या गाता है?
2. करूणा का संदेश कौन देता है?
3. प्रसन्नतांपूर्वक आत्म– बलिदान का प्रेरक कौन है?
4. निरंतर प्रयत्न की प्रेरणा कौन प्रदान करता है?
5. हलोरें काँप–काँप कर क्यों रहा जाती है?
6. लहरें मनुष्य को क्या प्रेरणा देती है?
7. फूलों से हमें क्या संदेश मिलता है?

वर्ग–7 **<u>हिन्दी व्याकरण</u>** दिनांक–04 / 05 / 2020

<u>पाठ–शब्द विचार</u>

शब्द किसी कहते हैं?

वर्णो के सार्थक एवं व्यवस्थित समहू को शब्द कहते हैं।(साधरण शब्दों में–वर्णो का व्यवस्थित समूह जो एक निश्चित अर्थ देता है उसे शब्द कहते हैं।)

जैसे–त्+इ+त्+अ+ल्+ई–तितली, क्+इ+स्+आ+न्+अ–किसान

<u>शब्दों के भेद</u>

शब्दों को चार भागों में बाँटा गया है–

1. **उत्पति या स्रोत के आधार पर**– उत्पति या स्रोत के आधार पर शब्द को चार भागों में बाँटा गया है–

क. तत्सम शब्द– तत्सम शब्द दो शब्दों के मेल से बना है–तत्+सम। तत् का अर्थ है–उसके और सम का अर्थ है– समान।

संस्कृत भाषा के मूल शब्द जो हिंदी में ज्यों के त्यों(उसी रुप में) प्रयुक्त किए जाते है उसे तत्सम शब्द कहते है। जैसे–सर्प, दिवस, कवि, गरु, लता, आदि।

ख. तद्भव शब्द– तद्भव का अर्थ है–उससे उत्पन्न अर्थात् संस्कृत भाषा से उत्पन्न।

संस्कृत के वे शब्द जिनका हिंदी भाषा में प्रयोग करते समय उसके रुप में थोड़ा परिवर्तन हो जाता है, उसे तद्भव कहते है

जैसे–	**<u>तत्सम</u>**		<u>तद्भव</u>
	अश्रु	–	आँसू
	दिवस	–	दिन
	दंत	–	दाँत
	रत्न	–	रतन
	चंद्र	–	चाँद

ग. देशज शब्द–देशज का अर्थ है देश+ज का अर्थात देश में जन्मा। जो शब्द अपने ही देश की भिन्न–भिन्न क्षेत्रीय बोलियो से हिंदी भाषा में आते हैं, उन्हे देशज शब्द कहा जाता है। जैसे – कपास, चूड़ी, खाट, आदि।

घ. विदेशी शब्द– ये वे शब्द हैं जो विदेशी संपर्क के कारण अनेक विदेशी शब्द हिंदी में आ गए है। वे शब्द जो विदेशी भाषाओं जैसे अंग्रेजी, अरबी,फारसी, चीनी आदि से हिंदी में आए हैं विदेशी शब्द कहलाते हैं। जैसे–अंग्रेजी–कार, स्कूल, टिकट आदि।

अरबी– इनाम, नजर, खबर आदि।

फारसी– कागज, मेज, दुकान आदि।

तुर्की– तोप, चाकू, चेचक आदि।

पुर्तगाली– संतरा, साबुन, कमरा आदि।

2. **<u>बनावट या रचना के आधार पर–</u>**

बनावट या रचना के आधार पर शब्द के तीन भेद है–

क. रूढ़– रूढ़ का अर्थ है, प्रसिद्ध। जो शब्द परंपरा से ही किसी विशेष अर्थ के लिए प्रयुक्त होते है तथा इनके टुकड़े करने पर भी इनके खंडों से कोई अर्थ नहीं निकलता, उन्हें रूढ़ शब्द कहते है जैसे–पशु, घोड़, मोर, आदि।(इन शब्दों के खंडों प+शु, घो+ड़ा, मो+र, का अलग–अलग कोई अर्थ नहीं है।

ख. यौगिक शब्द– दो या दो से अधिक शब्दो या शब्दांशो के मेल(योग) से बने सार्थक शब्द यौगिक शब्द कहलाते हैं। जैसे– पुस्तक+आलय– पुस्तकालय
प्रधान+मंत्री– प्रधानमंत्री
व्यायाम+शाला– व्यायामशाला

ग. योगरूढ़ शब्द – दो या दो से अधिक शब्दों या शब्दांशों के मेल से बनने वाले ऐसे शब्द जो किसी विशेष अर्थ का बोध करवाते हैं योगरूढ़ कहलाते हैं जैसे– हिम + आलय–हिमालय, जल+ज– जलज,कमल के लिए प्रसिद्ध जल+ज का अर्थ है जो जल में उत्पन्न हुआ हो। जल में उत्पन्न होनी वाली अनके वस्तुएँ या जीव हो सकती है कीचड़ मछली आदि। पर जलज– कमल के लिए प्रसिद्ध हो गया है।

चारपाई–(चार+पाई) का अर्थ है जिसके चार पाए हैं। यहाँ पर कई वस्तुओं के चार पाए हो सकते हैं जैसे मेज, कुर्सी, स्टूल आदि, परंतु चारपाई– खाट के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

3. <u>अर्थ **के आधार पर**</u>

अर्थ के आधार पर शब्दों को दो भागों में बाँटा गया है–

क. सार्थक शब्द– जो शब्द अर्थ बोधक होता हैं उन्हें सार्थक शब्द कहा जाता हैं। जैसे– नदी, बच्चा आदि।

साधारण शब्दों में– ऐसा शब्द जिसका कोई न कोई अर्थ होता है सार्थक शब्द कहलाता है। सार्थक शब्दों को हम निम्नलिखित वर्गों में बाँट सकते हैं–

एकार्थी शब्द– जिन शब्दों का प्रयोग केवल एक ही अर्थ में किया जा सकता है, जैसे– पानी, घर, हवा

अनेकार्थी शब्द– जिन शब्दो के एक से अधिक अर्थ होते हैं उन्हे अनेकार्थी शब्द कहा जाता है जैसे विधि अनेकार्थी शब्द है। इसके कई अर्थ हैं– तरीका, कानून, भाग्य आदि।

विलोम शब्द– ऐसा शब्द जो एक दूसरे का उलटा अर्थ देता है विलोम शब्द कहलाते हैं जैसे–जीवन–मरण आदि।

पर्यायवाची शब्द– ऐसा शब्द जो लगभग एक जैसे अर्थ को प्रकट करते हैं पर्यायवाची या समानार्थी शब्द कहलाते है। जैसे– आँख– नयन, नेत्र आदि।

श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द– ऐसे शब्द जो सुनने में समान जैसे लगे, परंतु अर्थ की दृष्टि से भिन्न हो, उन्हें श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द कहते है जैसे– चर्म(चमड़ा) चरम(अतिंम)

वाक्यांशों के लिए एक शब्द– ऐसा शब्द जो वाक्यांशो के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं। वाक्यांशो के लिए एक शब्द कहे जाते हैं जैसे–जो दूर की सोचता हो– दूरदर्शी।

ख. निरर्थक शब्द– जिन शब्दों का कोई अर्थ नहीं होता, वे निरर्थक शब्द, कहलाते हैं जैसे– पानी–वानी, चाय–वाय।

यहाँ वानी और वाय निरर्थक शब्द है।

4.वाक्य में प्रयोग के आधार पर–

वाक्य में प्रयोग के आधार पर शब्दों के दो भेद हैं–

क. विकारी शब्द– जो शब्द भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में अपना रूप बदल देती है, वे विकारी शब्द कहलाते हैं जैसे– लड़का–लड़के, मैं–मेरा, अच्छा–अच्छी आदि।

ख. अविकारी शब्द– जिन शब्दों में कभी परिवर्तन नहीं होता, उन्हे अविकारी शब्द कहते है, अविकारी शब्दों की संख्या चार है

क्रियाविशेषण–जैसे–वहाँ, इधर,धीरे–धीरे आदि।

संबंधबोधक–जैसे–के नीचे, के बाद, से पहले आदि।

समुच्चयबोधक–जैसे–और,किंतु,परतु आदि।

विस्मयादिबोधक–जैसे–वाह!, अरे!, ओह आदि।

गृह कार्य (अपनी कॉपी पर लिखें और याद करें।)

1.शब्द किसे कहते हैं?

2. शब्दों को कितने भागो में बाँटा गया है?

3. रचना के आधार पर शब्दों कितने प्रकार के होते है?

4. अर्थ_के आधार पर शब्दों कितने प्रकार के होते है?

अंतर स्पष्ट कीजिए–

1. तत्सम और तद्भव शब्द

2. विकारी और अविकारी शब्द

3. रूढ़ यौगिक और योगरूढ़ शब्द